International Journal of Engineering Research & Management Technology
ISSN: 2348-4039
March-April-2017 Volume 4, Issue-2
Email: editor@ijermt.org www.ijermt.org

गुजराती और ब्रजभाषा कृष्ण-रचनाओं का विचारगत और भावगत साम्य

डॉ. निशा रम्पाल,

हिन्दी विभाग, भाषा-भवन,

गुजरात युनिवर्सिटी, अहमदाबाद.

गुजरातीऔरब्रजभाषा कृष्ण काव्य रचनाओं में रचनागत द्वारा प्रस्तुत विचार और भाव में व्यापक समानता

देखने को मिलती है दोनों भाषाओं से जो सम्बन्ध भौगलिक आधार एवं प्रदेशों की सांस्कृतिक एकता का परिणाम है।

थोडा सा अन्तर है संस्कृति की क्षेत्रीय विशेषताओं पर आधारित है ।इस साम्य और वैषम्य में ब्रज तथा गुजरात की भौगोलिक स्थिति का बहुत बड़ा हाथ रहा है ,जिसके कारण दोनों का सांस्कृतिक सम्बन्ध इतनी मात्री में संभव हो सका ।

यह सम्बन्ध धर्म , राजनीति , भाषा और साहित्य आदि जीवन के सभी क्षेत्रौं में व्यक्त हुआ । कृष्ण का यादवों समेत मथुरा

को छोड़कर द्वारका में जा बसना एक एसी घटना है जिसे दोनों प्रदेशों के सांस्कृतिक सम्बन्ध के प्रतीक रूप में ग्रहण किया जा सकता है । कृष्ण की जन्मभूमि मथुरा है और भूमि गुजरात । गुजरात के काठियावाड़ में प्रभास से कुछ मील

दूर एक स्थल जिसका नाम भालका तीर्थ है जहॉ कृष्ण की देह शर-विद्ध होकर गिरे थे । इसी तरह मथुरा के इतिहास

में कृष्ण के महाभिनिष्क्रमण को बहुत महत्वपूर्ण घटना माना जाता है ।.कृष्ण के जीवन से सम्बन्ध होने के कारण ही

मथुरा और द्वारका को भारतवर्ष की सात मोक्षदायिका पुरियों में स्थान मिला है । कृष्ण के समय की द्वारका और वर्तमान

की द्वारका की स्थिति में भेद माना जाता है फिर भी आधुनिक द्वारका का इतिहास 3000 वर्ष प्राचीन कहा जा सकता है

मथुरा से द्वारका तक के सुविस्तृत क्षेत्र में कृष्ण भक्ति अत्यन्त प्राचीनकाल से प्रचलित रही जिसके अनेक प्रमाण पुरातत्व

विभाग की खोजों में मिलता हैं । “मथुरा क्षेत्र में कृष्ण –बलराम की कई मूर्तिया अपलब्ध हुई है । एक शिला पर नवजात

कृष्ण को लेकर वसुदेव के यमुना पार करने का दृश्य अंकित मिलता है और एक गुप्तकालीन मूर्ति कालीय-दमन की भी मिलती है .” 1

गुजरात क्षेत्र में “कालीयमर्दन और गोवर्धन धारण विषयक अनेक प्रतिमाएं अथवा प्रस्तर आलेखन आबू,मनोद,सोमनाथ तथा मांगरोल नामक स्थानों पर मिलेपी है ।”2 . कृष्ण का त्रैलोक्यमोहन रूप तो “केवल गुजरात में ही उपलब्ध होता है” 3.

कृष्ण की चतुर्भुज और द्विभुज मूर्तियां विष्णु से अनकी एकता प्रमाणित करती है ।गुजरात में कृष्ण – भक्ति के प्रचार का एक अत्यन्त महत्व पूर्ण प्रमाण अनावाडा से प्राप्त वि.सं. 1348 के शिला लेख से मिलता हैं जो शांगदेव से सम्बन्ध है ।

इस लेख का प्रारम्भ ' वेदानुद्धरते जगन्ति वहते भूभारमुद्विभ्रते' से होता है । यह जयदेव के "'गीत-गोविन्द ' की पक्तिं है।इस

शिला लेख से एक कृष्ण – मन्दिर के होने की भी सूचना मिलती है ।"4 दामोदार की उपासना के भी कई प्रमाण मिलते है ।

गिरनार में प्राप्त होने वाला सं.1473 का एक शिलालेख दामोदर कृष्ण की स्तुति से प्रांरभ होता है । जिस प्रकार द्वारका में रणछोणराय का महत्व है उसी प्रकार जूनागढ़ में दामोदर का । कृष्ण के अतिरिक्त विष्णु के अन्य रूपों की उपासना का भी

विकास इस क्षेत्र में समान रूप से हुआ है ।

कृष्ण भक्ति और वैष्णवधर्म से इतर शैव तथा जैन धर्म के द्वारा भी गुजरात का और ब्रज का संम्बध रहा है ,सोमनाथ से

लेकर काशी के विश्वनाथ तक शैव उपासना का एक स्वर ही गूँजता रहा ।मथुरा का आधुनिक कंकाली टीला प्राचीन समय

से इस धर्म का प्रभाव रहा है ." गुजरात में भी जैन साहित्य में कृष्ण को स्थान मिला जिसका विषेश परिचय जैनागमों में

श्री कृष्ण शीर्षक में अगरचन्द नाहटा ने दिया है ।" 5 आठवीं और दसवीं शती के जैन कवि स्वयंभू और पुष्पदन्त आदि के काव्यों में विविध कृष्णलीलाओं का भी वर्णन मिलता है । आचार्य हेमचंद्र के रचनाओं में भी मिलता है। राजनैतिक रूप में

मध्येप्रदेश और गुजरात अनेक बार अभिन्न रहे हैं । "उग्रसेन ने कृष्ण की सहायता से द्वारका को राजधानी बनाकर भी दूर फैले हुए यादवों पर शासन किया ।" 6 परशुराम का आतंक महिष्मति से मिथिला तक व्याप्त था । पौराणिक काल के इन

सम्बन्धों के बाद मौर्यकाल के सुस्पष्ट इतिहास से प्रमाणित होता है कि "मध्देश के साथ ही चन्द्रगुप्त मौर्य का आधिपत्य

आनंत और सौराष्ट्र पर भी था तथा अशोक का सामाज्य भी मध्देश से सौराष्ट्र तक विस्तृत था जिसकी साक्षी गिरनार के शिलालेख देते हैं । "7 नवीं शती से दुसरे दशक तक कन्नौज से कृष्ण का विस्तृत वर्णन मिलता है । आगे देखे तो गुजरात का

सम्पर्क ब्रजप्रदेश से इतना रहा कि आजकत कृष्ण का रूप बनाकर ग्वाले ग्वालिन राधा का रूप धारण करते है .और रास खेलते है आज भी गुजरात में छोटे बच्चे को कानुड़ा के नाम बुलाते है । गुजरात और ब्रजप्रदेश में इसका प्रभुत्व अधिक रहा है । एक विद्वान की धारणा हैकि "यदि गुजराती साहित्य में से भागवत से अनुप्रेरित सारी रचनाओं को निकाल दिया जाय तो बहुत कम ऐसी रचनाएँ रह जायेगी जिन्हें साहित्य कहा जा सके ।" 8

गुजराती कृष्ण काव्य पर दृष्टि पात करने से ज्ञात होता है कि गुजरात न केवल भागवत से सुपरिचित था वरन् उससे संबंधी

अन्य साहित्य का भी उसे पूर्ण ज्ञान था । रत्नेशवेर ने भागवत की श्रीधर टीका को अपने अनुवाद का आधार बनाया और

भीम ने वोपदेव के हरिलीलामृत को । इससे स्पष्ट हो जाता है कि ब्रजभाषा से अधिक भागवत के अनुवाद गुजराती में हुए।

गुजरात में कई ऐसे ग्रन्थों के प्रचार के प्रमाण भी मिलते हैं जिनसे ब्रज का परिचय नहीं था जैसे "नृसिंहारण्य का विष्णुभक्ति –चन्द्रोय जिसकी सं . 1469 वि. में लिखित प्रति का एक पृष्ठ नरसी के जन्म-स्थान तलाजा में प्राप्त हुआ ।"9 पूना के भंडारकर इन्स्टीट्यूट के संग्रहालय में इसकी अनेक प्रतियाँ मिलती है । विल्वमंगल द्वारा रचित कृष्णकर्णामृत, से भी गुजराती कृष्ण – काव्य ने प्रेरणा ग्रहण की है जैसा "केशवदास की रचना में संगुफित उसके तीन शलोकों से ज्ञात होता है।

यह भी कहा जाता है कि चैतन्य इस रचना की रमणीयता पर मुग्ध होकर इसे द्वारका से नदीया ले गये थे ।"10

गपजरात में गीतगोविन्द के 13वीं शती से बहु प्रचलित होने का उल्लेख किया जा चुका है । वस्तुत भागवत के बाद जिस ग्रंथ ने गुजराती और ब्रजभाषा कृष्ण – काव्य को विशेष रूप से प्रभावित किया वह यही गीतगोविन्द है ।

गुजराती के सर्वप्रमुख पदकार नरसी का जयदेव की इस रचना से घनिष्ठतम परिचय मिलता है । इतना ही नहीं उन्होनें

अपनी रचनाओं में जयदेव का नामोंल्लेख मात्र न करके उन्हें पात्रता प्रदान की है । नरसी ने स्वयं को गोपियों और जयदेव को परम्परा का भक्त माना है- " अंक जाणे छो ब्रजनी गोपी के रस जयदेवे पीधो रे । उगतो रस अवनी ढलतो नरसैये ताणी ने लीधो रे ।" दुर्गाशंकर शास्त्री ने नरसी पर जयदेव के प्रभाव का अत्यंन्त सूक्ष्म विश्लेषण किया है । 11"

गीतगोविन्द का प्रभाव ब्रजभाषा के कृष्ण – भक्त कवियों पर भी पर्याप्त रूप से मिलता है । इस रचना की अनेक प्रतिलिपियाँ हिन्दी की प्राचीन पुस्तकों के साथ बंधी ब्रज के वैष्णव घरों तथा मदिरों में मिलती है जिससे ज्ञात होता हैकि चाहे संगीत की दृष्टि से ही , चाहे इसमें निहित भावों की दृष्टि से हो, ब्रज में इसका बहुत प्रचार था ।

आलोच्यकाल के कई कवियों के पदों में जयदेव की कोमलकांत पदावली के अशं ध्वनित और ग्रथित मिलते हे जैसे हरिराम व्यास के पदों में जैसे धीर समीरे यमुना तोरे '- क छाया स्पष्ट झलकती है । यद्यपि ब्रजभाषा कृष्ण- काव्य की तरह गुजराती

कृष्ण- काव्य विभिन्न भक्ति सम्प्रदायों के अन्तर्गत विकसित नहीं रही . यह अवश्य हैकि वृन्दावन और गोकुल इन सम्प्रदायों के प्रमुख केन्द्र रहें जबकि "गुजरात किसी भी वैष्णव भक्ति –सम्प्रदाय का ब्रज की तरह केन्द्र न बन सका । गुजरात में जो वैष्णव धर्म के जो चिन्ह मिलते हैं वे साम्प्रदायिक न होकर सामान्य अ एवं पौराणिक हैं ।" 12

15 वीं शतीं में रामानुज - सम्प्रदाय प्रसारित होने लगा । द्वारका में "12 वीं शतीं में रामानुज का प्रभाव रहा हो ऐसी भी संभावना दुर्गाशंकर सास्त्री द्वारा स्वीकार की गयी है ।"13 रामानंद ने रामानुज - सम्प्रदाय से कुछ भिन्न मान्यताओं को स्थापित करते हुए राम -भक्ति का प्रचार किया और उनके कबीर,रैदास आदि शिष्यों का प्रभाव समस्त उत्तर भारत में व्याप्त

हो गया । मध्यदेश में कबीर और तुलसी ने उन्हीं का अनुसरण करते हुए राम को इष्टदेव के रूप में ग्रहण किया ।गुजरात

में "रामानंद का प्रभाव 14वीं शती के उत्तरार्ध से लेकर 15वीं शती के बाद तक रहा ।"14 मीरां के पदों में कृष्ण के लिए अनेक रामवाची शब्द प्रयुक्त हुए हैं । नरसी ने भी अपने को कृष्ण के साथ रामनाम का व्यापारी कहा है -संतो हमें रे वेवारीया श्री रामनामनां । राधा - कृष्ण के युगल रूप की उपासना को प्रश्रय देने वाले निम्बार्क -मत का प्रभाव वृंदावन पर तो रहा परन्तु गुजरात में परिलक्षित नही होता ।राध -कृष्ण के उपासक राधावल्लभीय सम्प्रदाय के सम्बन्ध में अवश्य

कहा जाता है कि वल्लभ सम्प्रदाय से पहले उसी ने गुजरात को अपना प्रभाव - क्षेत्र बनाया था । मीरा और नरसी की प्रेम-ज्वालाएँ कहाँ से गुजरात के कृष्ण का प्रभाव था । नरसी के दार्शनिक विचार शुद्धाद्वैतवाद से बहुत मिलते है उन्होनें लीलाभेद , लीला रस, आदि का प्रयोग भी किया है कि लीला की महत्ता भागवत में मुख्यता निरूपित की गई है और दार्शनिक क्षेत्र में भी उसकी देन महत्वपूर्ण है ।

गुजराती साहित्य पर पुष्टिमार्ग का प्रभाव वस्तुत:सत्रहवीं शती के पड़ना प्रारंभ हुआ । इस समय तक वल्लभाचार्य और विट्ठलनाथ अनेक बार गुजरात जा चुके थे और अनेक स्थलों पर उनकी बैठकें स्थापित हो चुकी थी । "वल्लभाचार्य अपने प्रवास में सूरत,भरूच,मौरवीं,नवानगर , खंभालिया,पिडंतार डाकोर,द्वारका ,जूनागढ़,प्रभास,नरोडा,गोधरा आदि स्थानों पर गये ऐसा माना जाता है ।"15.वल्लभाचार्य के ज्येष्ठ पुत्र गोपीनाथ के प्रचार का मुख्य क्षेत्र गुजरात ही था । गुजरात में पुष्टिमार्ग इतना व्यापक हो गया की उसका घर बन गया और वैष्णव का अर्थ ही पुष्टिमार्गीय वैष्णव हो गया ।

गोसाई विट्ठलनाथ के एक अन्य गुजराती शिष्य गोपालदास ने वल्लभाख्यान और भक्तिपीयूष नामक दो ग्रंथों की रचना की जिनमें वल्लभाख्यान पर ब्रजभाषा पर टीका भी हुई है । इसरचना में कवि ने "अपने गुरू श्रीविट्ठलनाथ की लीलाधारी कृष्ण का साक्षात् स्वरूप माना है ।"16.आलोच्य काल के तीन गुजराती कवियों पर पुष्टिनार्ग का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है ,

इनमें से एक है रसिकगीता के रचियता भीम,दूसरे हैं मथुरालीला के रचियता केशवदास और तीसरे हैं रासलीलाकार का वैकुंठदास । भीम विट्ठलनाथ के शिष्य थे और केशवदास तथा वैकुंठदास गोकुलनाथ के ।

17वीं शती में और भी एक कवि हुए हैं जिन पर पुष्टिमार्ग का प्रभाव मिलता है । उनका नाम है महाबदास । अष्ट छाप के कवियों के पद वैष्णव सम्प्रदाय के मंदिरों में गाये जाते रहे और गुजराती मद्ययुगीन भक्ति – काव्य के अन्तिम स्तम्भ दयाराम को उनसे पर्याप्त प्रेरणा मिली । गुजराती कवि केशवदास के श्रीकृष्णक्रीड़ाकाव्य में एक गोपी जनवल्लभाष्टक दिया है वैसा ही अष्टक वल्लभ-सम्प्रदाय में हरिरायकृत माना जाता है । हरिराय का गुजरात से पर्याप्त सम्पर्क रहा । इस प्रकार गुजरात पर उस पुष्टिमार्ग का व्यापक प्रभाव मिलता है जिसका केन्द्र ब्रज था । गुजरात ने पुष्टिमार्ग के विकास में उसे स्वीकार करके ही योग नहीं दिया । इन्होंने अपने अधिकार से गोसाई विट्लनाथ तक को श्रीनाथ जी की सेवा में निर्वासित कर दिया था युगों पुरानी गुजरात और ब्रज की अभिन्नता पुष्टिमार्ग के प्रसार के साथ चरमसीमा पर पहुँच गयी । गुजरात की शैली और ब्रज की शैली में छंद गत विशेषताएँ भी कृष्ण काव्य में मिलती है .जैसे आख्यान – शैली और संस्कृत वृत्तों का प्रयोग ।इसी तरह बहुमुखी सास्कृतिक एकता के साथ साथ विशेषताऐ भी मिलती हैं । ब्रज की लोक-संस्कृति ब्रज –काव्य में और गुजरात की लोक – संस्कृति गुजराती काव्य में प्रतिबिम्बित है। यमुना के किनारे के लिए ब्रज में प्रयुक्त तट या तीर का प्रयोग न करकें नरसी ने कांठे का प्रयोग किया हैं जो गुजरात में सुप्रचलित है – सुन्दर जमुना जी ने कांठे रे उग्यो शरदपुनम नो चंद ।(न.कृ.का .पृ.418) गुजरात और ब्रज की बहुत सी परम्पराएँ अभिन्न रही हैं इसलिए दोनो के कान्यों में बहुत से समान तत्व उपलब्द होते है । उनके लिए कदापि नही कहा जा सकता कि वे ईस भाषा के साहित्य के प्रभाव से उस भाषा के साहित्य में आये हैं पर कुछ बातें ऐसी है जिनके विषय में किसी भ्रान्ति की संभावना नहीं है । गुजरात में जो साहित्य पुष्टिमार्ग की प्रेरणा से रचा गया उस पर निश्चय ही ब्रज की विचारधारा का प्रभाव है , क्योकि सम्प्रदाय का प्रधान केन्द्र ब्रज ही बना रहा । इसी तरह गुजराती के भालण ,नरसी,केशवदास , लक्ष्मीदास,ब्रेहदेव,आदि की रचनाओं में जो ब्रजभाषा का प्रयोग मिलता है वह भी निश्चित रूप से ब्रज का प्रभाव कहा जा सकता है । अस्तु.

संदर्भ सूची .

1 पृ. सं. 98, मथुरा परिचय ,लेखक –श्री कृष्णदत्त बाजपेयी, लोक साहित्य सहयोगी प्रकाशन , मथुरा , प्रथम संस्करण 1950ई. ।

2. पृ.सं. 97, गुजराती साहित्य , संपादक –कनैयालाल माणिकलाल मुंशी, प्रकाशक – श्री साहित्य प्रकाशक कम्पनी लिमिटेड़, बम्बई, चतुर्थ संस्करण 1925 ई.।

3. पृ.सं. 229 , आरकेलोजी ऑफ गुजरात – एच.ड़ी.सनकालीया ,प्रकाशक नटवरलाल एंड कम्पनी होर्नरोड़,बोम्बे, प्रथम संस्करण - 1941 ई.।

4. पृ.सं. 357, वैष्णवधर्म नो संक्षिप्त इतिहास , आरकेलोजी ऑफ गुजरात – एच.ड़ी.सनकालीया ,प्रकाशक नटवरलाल एंड कम्पनी होर्नरोड़,बोम्बे , प्रथम संस्करण - 1941 ई.।

5.पृ. 236, विश्व भारती (पत्रिका), शातिं निकेतन , खंड़ -तीन ,अंक चार, सन् 1944.

6. पृ .12, गुजराती भाषा और साहत्यि , वीलसनं फीलोजिकल लेक्चर,सम्पादक एन .बी. देवाटिया , प्रकाशन -मैकमिलन और को.लिमिटेण ,मुम्बई सन् 1921.

7. पृ. 12-13, गुजराती भाषा और साहत्यि , वीलसनं फीलोजिकल लेक्चर,सम्पादक एन .बी. देवाटिया , प्रकाशन - मैकमिलन और को.लिमिटेण ,मुम्बई सन् 1921.

8.पृ. 223 ,गुजराती भाषा और साहत्यि , वीलसनं फीलोजिकल लेक्चर,सम्पादक एन .बी. देवाटिया , प्रकाशन - मैकमिल और को.लिमिटेण ,मुम्बई सन् 1921.

9.पृ. 359, वैष्णव धर्म का संक्षिप्त इतिहास ,लेखक - श्री दुर्गाशंकर केशवराम शास्त्री , प्रकाशक अंबालाल रामजानी,मुबंई,सन् 1939.

10 पृ 10, श्रीकृष्णलीला काव्य -केशबदास कायस्थ, प्रकाशक अंबालाल रामजानी,मुबंई, सन् 1939.

11. पृ. 134, ऐतिहातिक संशोधन - लेखक - श्री दुर्गाशंकर केशवराम शास्त्री,प्रकाशक - गुजराती साहित्य परिषद्,प्रथम आवृर्ति , सन् 1949.

12. पृ. 353, वैष्णव धर्म का संक्षिप्त इतिहास ,लेखक - श्री दुर्गाशंकर केशवराम शास्त्री , प्रकाशक अंबालाल रामजानी,मुबंई,सन् 1939.

13. पृ. 116, गुजराती साहित्य -संपादक -कनैयालाल माणिकलाल मुशीं ,प्रकाशक - श्री साहित्य प्रकाशक कम्पनी लिमिटेड, बम्बई, सन् 1925.

14. पृ . 613, ऐतिहातिक संशोधन - लेखक - श्री दुर्गाशंकर केशवराम शास्त्री,प्रकाशक - गुजराती साहित्य परिषद्,प्रथम आवृर्ति , सन् 1949.

15. पृ. 49, जराती भाषा और साहत्यि , वीलसनं फीलोजिकल लेक्चर,सम्पादक एन .बी. देवाटिया , प्रकाशन - मैकमिल और को.लिमिटेण ,मुम्बई सन् 1921.

16. पृ. 367 , गुजराती साहित्य -संपादक -कनैयालाल माणिकलाल मुशीं ,प्रकाशक - श्री साहित्य प्रकाशक कम्पनी लिमिटेड, बम्बई, सन् 1925.